IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पं.मिथिलेश शर्मा के रचना संसार में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की राष्ट्रचेतना : एक विमर्श

शोधार्थी,
कृष्णा
संस्कृत विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर रोहतक

मुख्य शब्द : जीवनमूल्य, समाज, राष्ट्रधर्म, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राजनीतिकमूल्य

सारांश :

दीनदयाल उपाध्याय का अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व करने वाले राष्ट्र के प्रमुख नेताओं में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह प्रमुख स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के नाते जीवन भर रहे राजनीति में भी संघ के द्वारा भेजे गए। राजनीति क्यों होनी चाहिए? राजनीति में हम क्या आदर्श स्थापित करना चाहिए? इन आदर्शों को लेकर यह दीनदयाल उपाध्याय ने आजीवन मानवता की सेवा की। भारतीय जनसंघ दल की स्थापना राष्ट्रीय स्वयं सेवकसंघ के प्रथम अध्यक्षा श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा की गई। श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आकस्मिक देहावसान के पश्चात् भारतीय जनसंघ दल की बागडोर पूर्ण रूप से दीनदयाल उपाध्याय के हाथों में आ गई। दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीतिक दल के सम्मानीय सदस्यों और कार्यकत्ताओं के समक्ष एक समर्पित राजनेता का आदर्श प्रस्तुत किया।

प्रस्तावना :

भारतीय राजनीति के इतिहास में दीनदयाल उपाध्याय की राजनीतिक जीवनमूल्य अत्यन्त स्पष्ट व असाधारण रहे हैं। उन्होंने कभी भी अपने सिद्धातों से समझौता नहीं किया। उनका मानना था कि कभी भी वोट बैंक के लिए राष्ट्र को जाति, धर्म, पंथ संप्रदाय आदि में नहीं बाँटना चाहिए। राजनीतिक दलों तथा कार्यकर्ताओं के लिए एक आदर्श स्थापित करते हैं। उन्होंने राष्ट्र की एकता और अखंडता सर्वोपरि मानते हुए अपने राजनीतिक दल स्वयं को स्थान दिया। उन्होंने सदैव राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना है। उनके अनुसार कभी भी किसी राजनीतिक दल का हित राष्ट्रहित से ऊपर नहीं हो सकता। उन्होंने कि राष्ट्र का हित

सर्वोपरि होता है। वें शिक्षा, संस्कार, आदर्शवाद व्यवहार, धर्मदर्शन के माध्यम से मनुष्य के आत्मनियन्त्रण के पक्ष में थे।[1]

उनके मतानुसार भू–भाग, जनसंख्या, सभ्यता संस्कृति एवं भौतिक संसाधनों के संघात से राष्ट्र का निर्माण होता है। दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्र परिभाषा देते हुए कहा है कि संस्कृति राष्ट्र का शरीर नीति उसकी आत्मा तथा विराट भू–भाग उसका प्राण है।'' उनका मानना था कि भारत की परिस्थिति प्रजातन्त्र का राष्ट्रीय एकता से गहरा सम्बन्ध है यदि यहाँ प्रजातंत्र समाप्त हो गया तो राष्ट्रएकता भी समाप्त हो जाएगी।[2] भारत एक राष्ट्र है और वर्तमान समय में एक शक्तिशाली भारत बन कर भी उभर कर सामने आ रहा है। राष्ट्र में रहने वाले जनों का सबसे पहला दायित्य होता है कि यो राष्ट्र के प्रति ईमानदार तथा वफादार रहे। प्रत्येक नागरिक के लिए राष्ट्र सर्वोपरि होता है जब भी कभी अपने निजि हित राष्ट्रहित से टकराए तो राष्ट्रहित को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह हर एक राष्ट्रनक्त की निशानी होती है। भारत सदियों तक गुलाम रहा और उस गुलाम भारत को आजाद करवाने के लिए असंख्य वीरो ने अपने निजि स्वार्थी को दरकिनार करते हुए राष्ट्रहित में अपने जीवन की आहुति स्वतन्त्रता रूपी यज्ञ में डालकर राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरातन संस्कृति है और उसी संस्कृति से सीखकर भारत को आगे बढ़ने की आवश्यकता है।[3]

शोध का क्षेत्र :

रामराज्य तथा महाभारत में श्री कृष्ण की अपने के प्रति धर्म की नीति को न भुलाकर उससे सीखकर एक शक्तिशाली राष्ट्र की स्थापना कैसे करनी है? इसका चिंतन करना अति आवश्यक है। छत्रपति शिवाजी महाराणा प्रताप सम्राट चंद्रगुप्त; जैसे शक्तिशाली शासकों के जीवन से प्रेरणा लेकर भारत को दुनिया के अग्रणी राष्ट्रों की श्रेणी में कैसे ले कर आना इस पर भी चिंतन करने की जरूरत है।[4] हमें अपने गौरवमयी इतिहास को न भुलाकर आने वाले शक्तिशाली भारत का निर्माण करना है। दीनदयाल उपाध्याय स्वतंत्र भारत में अपनी भारतीय संस्कृति से सीख लेकर आगे बढ़ने की दिशा दिखाने वाले विचारक थे। दीनदयाल उपाध्याय सनातनधर्मी हैं।[5]

शोध का उद्देश्य :

प्राचीनता से हटकर आधुनिक बनने की प्रवृत्ति को समाज जीवन के लिए अहितकर मानते हैं। अतः भारतीय राष्ट्रजीवन के पाश्चात्य संपर्क व प्रभाव के कारण कटी हुई नई पीढ़ी को अपनी प्राचीन अवधारणाओं से ससंबद्ध करना चाहते है। राष्ट्र की परिभाषा विभिन्न विचारकों ने कुछ इस तरह दी है।[6] एडम स्मिथ ने राष्ट्र क्या है, कुछ इस तरह परिभाषित किया है मानव समुदाय जिनकी अपनी मातृभूमि हो, जिनकी समान गाथाएं और इतिहास एक जैसा हो, समान संस्कृति हो, अर्थव्यवस्था एक हो और भी सदस्यों के अधिकार व

[1] पंडित मिथिलेश शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्यायचरितम्, पृ.139

[2] पंडित मिथिलेश शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्यायचरितम्, पृ.106

[3] समर्थ भारत, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अर्थ (प्रो बाल आपटे) प्रस्तावना

[4] पंडित मिथिलेश शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्यायचरितम्, पृ.13–19

[5] भारतीय राजनीति को पंडित दीन दयाल उपाध्याय का योगदान, अध्याय 3. पं दीनदयाल जी का राजनीतिक चिंतन (डा ईला त्रिपाठी)

[6] पंडित मिथिलेश शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्यायचरितम्, पृ. 20

कर्तव्य समान हो। इमसर्न के अनुसार एक संबद्ध समुदाय, जिनकी विरासत समान हो और जो एक जैसा भविष्य पसंद करते हैं। फांसीसी लेखक अर्नेस्ट के अनुसार (1882) आधुनिक राष्ट्र केंद्राभिमुख तत्त्वों की ऐतिहासिक परिणति है। एक जैसा अतीत गौरव वर्तमान की एक समान इच्छा तथा एक साथ महान कार्य के निष्पादन व इसे बेहतर करने की इच्छा, ये सभी घटक जन बनने की अवश्यक शर्तें है और ऐसे जन की आत्मा राष्ट्र है। श्री गुरुजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक ने राष्ट्रजन के विभिन्न घटकों का उल्लेख किया है।[7] समकालीन इतिहास, समान परंपरा, शत्रु मित्रता का साथ समान मविष्य की आकाक्षा समान ऐसी भूमि का पुत्र संबंध समाज राष्ट्र कहलाता है।

दीनदयाल उपाध्याय ने भी राष्ट्र क्या है? इस संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए है– विश्व में आज समष्टि की सबसे बड़ी इकाई राष्ट्र है अत राष्ट्र की दृष्टि से अगर विचार करें तो राष्ट्र के लिए चार बातों की आवश्यकता होती है– प्रथम अवश्यकता है देश देश, भूमि और जन दोनों को मिलाकर बनता है। केवल भूमि ही देश नहीं। किसी भूमि पर एक जन (समाज) रहता हो और वह उस भूमि को मा के रूप में पूज्य समझो तभी वह देश कहलाता है। दूसरी अवश्यकता है सबकी इच्छाशक्ति यानि सामूहिक जीवन का संकल्प तीसरी एक व्यवस्था जिसे नियम या संविधान कह सकते हैं, इसके लिए हमारे यहां सबसे अच्छा शब्द प्रयुक्त होता है धर्म । चौथी आवश्यकता जीवन आदर्श अर्थात संस्कृति इन चारों का समुच्चय ही राष्ट्र है।[8]

उपयोगिता :

दीनदयाल उपाध्याय आधुनिक भारत के भारतीय विचारक थे उन्होंने सपतंत्रता के पश्चात्य देश में बनी परिस्थितयों का आकलन करके देश के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किए। देश कौन से विचार को लेकर आगे की दिशा और दशा निश्चित करे इसी के तहत उन्होंने विशुद्ध भारतीय परंपरा और संस्कृति से निकला विचार एकात्म मानव दर्शन देश के सामने प्रस्तुत किया। दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक और समाजिक विचारों को अलग करना काफी कठिन कार्य है, क्योंकि दीन दयाल उपाध्याय राजनीति व राज्य वादस्था को समाज की प्रतिनिधि व्यवस्था नहीं मानते। उनके राजनीतिक विचार भी सामाजिक और सांस्कृतिक के लिए अत्यन्त उपयोगी है।[9]

उपाध्याय जी का राजनीति में प्रवेश एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संपर्क :

दीनदयाल उपाध्याय अपनी स्नातक की पढाई करने के लिए कानपुर गए, वही उनका संपर्क 1937 में अपने सहपाठी बालूजी के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ। कानपुर में संघ संस्थापक डा हेडगेवार से भी उनकी भेंट हुई। कानपुर के इस विद्यार्थी जीवन से ही दीनदयाल उपाध्याय का सार्वजनिक जीवन प्रारंभ हो जाता है। सन् 1937 के बाद 1941 तक छात्र रहे। सन 1939 में उन्होंने संघ का 40 दिन का प्रशिक्षण वर्ग प्रथम वर्ष और सन 1942 मे द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अपनी पढ़ाई पूर्ण करने तथा द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद पं दीन दयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन

[7] इन डिटेसन, ए केस फार इन्क्वारी, कलकता सेकेंड एटीसन 1953 कश्मीर समस्या और जम्मू सत्याग्रह भारतीय जनसंघ प्रकाशन, दिल्ली

[8] पंडित मिथिलेश शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्यायचरितम्, पृ.22

[9] पाच्चजन्य कश्मीर अंक, (दीपावली, 2019) 28 अक्टूबर, 1962, पृ. 167

गए। ये आजीवन संघ के प्रचारक ही रहे।[10] संघ के माध्यम से ही वे राजनीति में गए भारतीय जनसंघ के महामंत्री तथा अध्यक्ष रहे और एक संपूर्ण राजनीतिक विचार के प्रणेता बने।

उपाध्याय की राजनीतिक देन :

स्वतंत्रता के बाद भारत कई प्रकार की समस्याओं से भी घिरा हुआ था, देश किस दिशा में आगे बढ़े और किस तरह से अग्रणी देशों की श्रेणी में अपने को लाकर खड़ा करे यह बहस होना स्वाभाविक था। देश में कांग्रेस का एक तरफा जनाधार था और एक शक्तिशाली राजनीतिक दल के नाते भी भारत में कार्य कर रही थी।[11] स्वतंत्रता के उदेश्य से ही कांग्रेस का निर्माण हुआ था और अपनी भूमिका भारत को आजाद करवाने के लिए बखूबी निभाई। अब भारत आजाद हो गया था और कांग्रेस एक मजबूत राजनीतिक दल बन कर कार्य कर रहा था, पर स्वतंत्र भारत में किस विचार को लेकर आगे बढ़ना है और क्या लक्ष्य लेकर भारत की दिशा और दशा तय करनी है, इसकी कमी साफतौर पर झलक रही थी पर कांग्रेस का कोई बहतर और मजबूत विकल्प भी नहीं दिख रहा था। काग्रेस में कुछ नेता ऐस भी थी जो भारत की परिस्थितयों को भली भांति समझते थे और राष्ट्रहित में कार्य कर रहे थे और कुछ ऐसे भी थे, जो अपने निजि स्वार्थो को साथ ले कर चल रहे थे और राष्ट्र के विकास और प्रगति को दरकिनार कर अपना प्रभुत्व दिखा रहे थे। हम सरदार पटेल के प्रयासों और पर्यत्नों को नहीं भूला सकते, जिन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमता तथा कुशल रणनिति का परिचय देते हुए विभिन्न स्वतंत्र रियासतों का भारत में विलय करवाया था श्यामा प्रसाद मुखर्जी जो नेहरू सरकार में भारत के पहले उद्योग मंत्री थे, परंतु जब नेहरू लियाकत समझौता हुआ, उसके दो पार नहीं थे और उन्होंने मंत्री से इस्तीफा दिया का श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में ही 21 अक्टूबर 1955 को अखिल भारतीय ज्ञानसंघ की स्थापना हुई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शक्ति एवं वा मुखर्जी के नेतृत्व में अन्य हिंदू राष्ट्रवादी समुदायों को साथ लेकर भारतीय जनसंघ को विकसित करने की योजना बनी, लेकिन नियति इस योजना के अनूकूल नहीं थी। जनसंघ की स्थापना के 21 महीन के बाद ही कश्मीर आंदोलन के तहत श्रीनगर की जेल में 23 जून 1953 को टा मुखर्जी की मृत्यु हो गई। राष्ट्रवादी भारतीय राजनीति जिसका प्रतिनिधित्व जनसंघ को करना था, के नेतृत्व का भार अब पूरी तौर पर संघ द्वारा राजनीति में भेजे कार्यकर्ताओं पर आ गया था। पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने प्रत्यक्षतः यह कार्य संभाला सर संघचालक गोलवलकर इन नवीन राजनीतिक कार्यकर्ताओं के प्रेरणास्रोत य मार्गदर्शक थे।

भारत की अखंडता और एकता भारत में जिस समय जनसंघ की स्थापना हुई। उस समय देश विपरीत परिस्थितयों से गुजर रहा था। कांग्रेस देश की परिस्थितयों को नहीं समझ पा रही थी और बिना किसी उदेश्य तथा लक्ष्य से देश में कार्य कर रही थी कांग्रेस के नेताओं में दूरदर्शिता की कमी साफ झलक रही थी। जन संघ का उद्देश्य साफ था और वह अखंड भारत की कल्पना कर कार्य करने वाला था। यह भारत को खंडित भारत करने के पक्ष में नहीं थे। जन संघ का स्पष्ट मानना था कि भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में दुनिया के सामने आएगा। दीन दयाल उपाध्याय के अनुसार अव भारत देश की भौगोलिक एकता का ही परिचायक नहीं है, अपितु जीवन के भारतीय दृष्टिकोण का शौक है, जो अनेकता में एकता का

[10] कश्मीर आंदोलन व मुखर्जी की मृत्यु के संदर्भ में निम्न पुस्तक पठनीय है उमाप्रसाद मुखर्जी ए मुखर्जी, श्यामाप्रसाद मुखर्जी हिज डेथ

[11] पंडित मिथिलेश शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्यायचरितम्, पृ.93

दर्शन करता है। अतः हमारे लिए अखंड भारत कोई राजनीतिक नारा नहीं है, बल्कि यह तो हमारे संपूर्ण जीवनदर्शन का मूलाधार है।[12]'' स्वतंत्रता के बाद कश्मीर भारत के लिए एक अनसुलझी सी पहेली बन कर सामने आया है। धारा 370 के तहत कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा प्रदान किया गया है। कश्मीर के अलगाववादी नेता कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग न मानते हुए अपने राजनीतिक स्वार्थ को राष्ट्र के हित के आगे विशेष प्राथमिकता देते रहे हैं। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग होते हुए भी भारत के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बना हुआ है। भारतीय जनसंघ की स्थापना के पश्चात ही कश्मीर को भारत में विलय करने के लिए आदोलनरत रहे कश्मीर आंदोलन के प्रसिद्ध तीन नारे थे। एक देश में दो विधान नहीं चलेंगे, एक देश में दो निशान नहीं चलेंगे, एक देश में दो प्रधान नहीं चलेंगे। दीनदयाल उपाध्याय भी अपने एक लेख में लिखते है आज कश्मीर कसौटी बन गया है. भारत को पथनिरपेक्ष राष्ट्रीयता की नेशनल कांग्रेस के नेताओं की राष्ट्रनिष्ठा की और संयुक्त राष्ट्र संघ की न्यायप्रियता की जिस कश्मीर के लिए भारतीय जनसंघ के प्रथम अध्यक्ष श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए और वर्तमान भारतीय जनता पार्टी के प्रेरणास्रोत दीनदयालउपाध्याय अपने जीवन में कश्मीर के लिए आंदोलन लड़ते रहे. आज उसी भारतीय जनता पार्टी की सरकार केंद्र में है। वर्तमान समय में भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में कार्य कर नहीं है और धारा 370 को राष्ट्र की अखडता में बाधा देखते हुए कश्मीर समस्या का समाधान कश्मीर का पूरी तरह से भारत में विलय करके किया है। यह उसी चितन का परिणाम दिखता है, जिसके लिए जनसंघ के दोनों नेताओं ने अपने राजनीतिक जीवन में राष्ट्र की अखंडता और एकता के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए।[13]

शोधपत्र की मौलिकता :

राजनीतिक दलों की भूमिका तथा चुनावी मैदान भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतात्रिक देश है। एक स्वस्थ लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका अहम हो जाती है। भारत में काफी राजनीतिक दल सकी है, कुछ क्षेत्रीय दल तथा कुछ राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रहे है। सभी राजनीतिक दल अपने अपने विचार को लेकर तथा लक्ष्य लेकर कार्य कर रहे है। राष्ट्र के विकास तथा उन्नति को गति देने के लिए राजनीतिक दलों की भूमिका भी अहम हो जाती है राजनीतिक दलों को बारे में दीनदयाल उपाध्याय अपनी राय रखते हैं और कहते है, कि एक श्रेष्ठ दल जो सत्ता पर अधिकार प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का झुंड न होकर एक जीवमान संगठन हो जिसका सत्ता प्राप्त करने के अतिरिक्त अपना अलग वैशिष्टय हो।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि अधिकतर राजनीतिक दल स्वार्थ और एक दूसरे राजनीतिक दलों को नीचा दिखाने की राजनीति ज्यादा कर रहे हैं, जो कि देश के विकास में भी बाधक है। चुनावी संग्राम में हम देखते हैं कि किस तरह से राजनीतिक दलों द्वारा जातिगत समीकरण बिठाए जाते हैं बाहुवल और धनपल का प्रयोग किया जाता है, जो कि एक स्वस्थ लोकतंत्र का परिचायक नहीं है। जातिवादी राजनीति वर्तमान समय में भारतीय लोकतंत्र में घातक बिमारी है। उपाध्याय की आस्था है कि मतदाता की बुद्धिमता ही इसका इलाज है। ये सब ऐसे तथ्य है कि जो देश की राजनीति को गलत दिशा में ले जा रहे हैं। राजनीतिक दलों को जो देश की राजनीति में प्रमुख दल के रूप में विकसित होना चाहते है। इन खतरों से सचेत रह कर अपने सिद्धांत की हत्या नहीं करनी चाहिए। इसी भांति जनता का यह कर्तव्य है कि यह

[12] पंडित मिथिलेश शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्यायचरितम्, पृ.147

[13] दीन दयाल उपाध्याय, मताधिकार कागज का टुकया नहीं, लोकाशा है, पंचजन्य 25 जनवरी 1962 (चुनाव विशेषांक 40)

जागरूक रहकर बुद्धिमता के साथ अपने विवेक का परिचय दे जिससे राजनीतिक दलों के गलत दृष्टिकोण को सुधारा जा सके। भारतीय जनता पार्टी दीन दयाल उपाध्याय को अपना आदर्श तथा प्रेरणास्त्रोत मान कर कार्य कर तो रही है, पर कहीं न कहीं चुनावी संग्राम में जातिवादी समीकरण बिठाने के लिए जातिगत राजनीति का शिकार हो जाती है। उपजितनी अधिक श्रद्धा भक्ति राष्ट्र के प्रति रखते थे, उतनी ही उनकी आस्था एवं श्रद्धा लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति थी। उन्होंने अपने संपूर्ण राजनीतिक जीवन में लोकतान्त्रिक मूल्यों को गतिशीलता प्रदान की। राष्ट्रीय संकट की घड़ी में राष्ट्रहित सर्वोपरि दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रहित में राजनीति करने वाले राजनीतिज्ञ थे। अपने भारतीय वीरो से, जिन्होंने भारत का स्वतंत्र करवाने के लिए अपने जीवन की आहूति स्वतंत्रता रूपी यश में हसते हसने बाल दी. उन्ही से प्रेरणा लेकर ही दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रहित के लिए ही राजनीति में आए। उनका पूरा प्रयत्न जनसंघ को राष्ट्रनीति में कार्य करने वाला राजनीतिक दल बनाना था। इसका उदाहरण हम देख सकते हैं, जब चीन द्वारा भारत पर आक्रमण किया गया, उस समय भारतीय जनसंघ का उत्तर प्रदेश में किसान आंदोलन चला हुआ था। दीनदयाल उपाध्याय की राजनीति चाल सीधी भी टेढ़ी नहीं राष्ट्रीय संकट की घंटी में भी सरकार की कठिनाई में डालकर अपने दल का स्वार्थ साधना उनकी राजनीति में नहीं बैठता था।[14] इसलिए उन्होंने इस संकट की घड़ी में तुरंत अपने किसान आंदोलन को बिना किसी शर्त स्थगित कर दिया।

निष्कर्ष: अन्त में निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि दीन दयाल ने राजनीति में जनसंघ के स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्तित्व को इस प्रकार बनाए रखना मूल उद्देश्य रहा। वे चाहते थे, कि यह देश के नवनिर्माण का कार्य कर सकते है। उनके विचार से जनसंघ केवल सत्ता प्राप्ति के लिए स्थापित दल नहीं था, बल्कि राजनीतिक क्षेत्र के साथ ही राष्ट्रजीवन में युग परिवर्तन कराने के लिए निर्मित राजनीति दल था। दीनदयाल उपाध्याय आधुनिक भारतीय राजनीति में क्रांति लाने वाल पुरोधा थे। राष्ट्र की अखंडता पर उन्होंने विशेष बल दिया और साथ ही विभाजन के पश्चात पाकिस्तान में रहने वाले हिंदू अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों तथा जबरन धर्म परिवर्तन पर अपने विचार प्रस्तुत किए, जिसके तहत अब इस्लामिक देश पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान में रह रहे अल्पसख्यको को एक विशेष प्रक्रिया के तहत भारत की नागरिकता प्रदान करने का प्रावधान किया गया है। उक्त विवेचन से हम कह सकते हैं कि दीनदयाल उपाध्याय का चरित्र इतना मजबूत था कि उनके कार्यों के प्रयत्न के परिणाम राजनीतिक परिदृश्य में देखे जा सकते है।

[14] पंडित मिथिलेश शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्यायचरितम्, पृ.208